IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का उनकी सांवेगिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन

राधा गुप्ता (शोध छात्रा)
डॉ0 दीप्ती कुमारी (सहायक प्रोफेसर)
शिक्षा संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का उनकी सांवेगिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया। न्यादर्श हेतु बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र में अवस्थित जनपद झांसी के महाविद्यालयों में स्नातक स्तर के तृतीय बर्ष में अध्ययनरत 200 कला संकाय, 200 वाणिज्य संकाय एवं 200 विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। विभिन्न चरों के मापन हेतु मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण एवं सहसम्बन्ध गुणाक का प्रयोग किया गया। अध्ययनोपरांत पाया गया कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्रायें, निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की तुलना में शैक्षिक आकांक्षाओं की दृष्टि से श्रेष्ठ है। स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सांवेगिक बुद्धि का सकारात्मक प्रभाव पडता है।

Key Terms - **स्नातक स्तर, शैक्षिक आकांक्षा व सांवेगिक बुद्धि**

I. प्रस्तावना

वर्तमान युग में मानव जीवन प्रत्येक क्षेत्र में विकास कर रहा है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिन–प्रतिदिन नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। जिसके कारण मनुष्य का जीवन यापन स्तर भी बदला है और मनुष्य जीवन दुरूहता से सरलता की ओर बढ़ा है। जो मनुष्य वर्तमान समय में कार, रेल, बस तथा हवाई जहाज से यात्रा करके कुछ ही घण्टों में दुर्गम स्थानों पर भी कम समय एवं आसानी से पहुँच जाता है, वहीं मनुष्य आज से सौ वर्ष पूर्व यात्रा करने में कठिनाई महसूस करता था। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास होने के कारण उसकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। जो मनुष्य पहले मजदूरी करते थे वे आज उद्योगपति बन गये हैं। मनुष्य अपनी आकांक्षा के परिप्रेक्ष्य में उन्नति करता है। जिस व्यक्ति की आकांक्षा स्तर में ठहराव होता है। उसके विकास की गति स्वतः रुक जाती है। आकांक्षा मानव जीवन को प्रगतिशील बनाने हेतु एक आवश्यक व मूलभूत प्रवृत्ति है।

शैक्षिक आकांक्षा के द्वारा ही निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाला बालक भी उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकता है। मनुष्य जिस वातावरण में रहता है उसी से प्रभावित होकर अपनी आकांक्षा को निर्मित करता है और आकांक्षा ही मानव के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने व गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालक की शैक्षिक आकांक्षा बहुत उच्च न होकर मध्यम ही हो सकती है। जब कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले बालक की शैक्षिक आकांक्षायें उच्च हो भी सकती हैं। शैक्षिक आकांक्षा स्तर व्यक्ति की व्यक्तिगत रूचि, अधिक्षमता तथा अन्य कारण पर भी निर्भर करती हैं। एक निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले बालक की शैक्षिक आकांक्षा भी उच्च हो सकती है। भारत के राष्ट्रपति डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम का सम्बन्ध भी निम्न सामाजिक आर्थिक परिवार से था किन्तु अपनी उच्च शैक्षिक

आकांक्षा के कारण उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करके, भारत के महानतम् परमाणु वैज्ञानिक हुये तथा भारतीय गणतंत्र के सर्वोच्च पद पर भी आसीन हुये।

डा0 भीमराव अम्बेडकर के उदाहरण से भी स्पष्ट है कि यदि मनुष्य की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर उच्च है, तो वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करके अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति को भी उच्च कर सकता है। मनुष्य अपनी शैक्षिक आकांक्षा के कारण ही चन्द्रमा पर अपना पैर जमा सका है तथा अतंरिक्ष में भी घर बसाने का प्रयास जारी है। शैक्षिक आकांक्षा के द्वारा मनुष्य श्रेष्ठ प्रशासक, व्यावसायी या नेता बनता है। मनुष्य उच्च शैक्षिक आकांक्षा से प्रेरित हो कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पूर्ण मनोयोग से कार्य करता है तथा लक्ष्य प्राप्ति के बाद मनुष्य की शैक्षिक आकांक्षा में और अधिक विस्तार हो जाता है। मनुष्य अपनी विचारधारा को मूर्तरूप शैक्षिक आकांक्षा के द्वारा ही करते हैं। मनुष्य तथा समाज का निर्माण, शिक्षा करती है और मानव के जीवन पृष्ठभूमि को प्रभावित करती है। मानव, शैक्षिक आंकाक्षा के कारण ही शिक्षा के स्तर में विकास करके अपने ज्ञान में नित्यप्रति निरंतर वृद्धि कर रहा है और समाज को नये–नये आयाम एवं लक्ष्य से परिचित करा रहा है।

व्यक्ति की सभी प्रकार की सफलताओं के पीछे पूरी तरह किसी न किसी रूप में उसकी मानसिक योग्यताओं तथा क्षमताओं का ही हाथ रहता है और इसलिए सामान्य बुद्धि की मात्रा यानी आई क्यू को एक ऐसा आधार माना जाता था जिससे यह भविष्यवाणी की जा सके कि व्यक्ति विशेष किसी कार्य विशेष के सम्पादन में किस सीमा तक सफल होगा। परन्तु इस धारणा का वर्चस्व मनोविज्ञान के क्षेत्र में होने वाले नवीनतम अनुसंधानों ने लगभग समाप्त सा ही कर दिया है। अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डॉ0 डेनियल गोलमैन का, बहुचर्चित पुस्तकों ने संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता एवं महत्व को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से जनमानस के समक्ष रखने का प्रयत्न किया है। संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता एवं महत्व के बारे में व्यक्त गोलमैन के इन विचारों को संक्षेप में लिपिबद्ध किया जा सकता है।

- संवेगात्मक बुद्धि के लिये सामान्य बुद्धि की तुलना में एक बात यह भी अधिक महत्वपूर्ण है कि इसे संवेगात्मक क्षमताओं में वृद्धि कर वांछित रूप से विकसित करने के प्रयास किये जा सकते है और फिर इस विकास के माध्यम से व्यक्तियों को अपना जवीन सुखमय और शांतिप्रद बनाने में सहायता की जा सकती है।
- संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा को मात्र इसलिए नहीं सराहा जा सकता है कि यह एक नवीनतम अवधारणा है बल्कि इसलिये कि यही एक ऐसी अवधारणा है जो बालकों और हम सभी के सामने आदर्श रखती है कि किस प्रकार हम अपने आपको समर्थ बनाये तथा सुखी रहे।
- संवेगात्मक बुद्धि के बारे में डेनियल गोलमैन द्वारा प्रतिपादित उपरोक्त विचारों ने एक तरह से हमारे जीवन के विविध क्षेत्रों में संवेगात्मक बुद्धि की आवश्यकता एवं उपयोग को लेकर एक क्रांति सी मचा दी है।

II. सम्बन्धित शोध साहित्य का सर्वेक्षण

शर्मा (2002) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की बुद्धि–लब्धि, शैक्षिक रूचि, आकांक्षा स्तर एवं पारिवारिक सम्बन्धों से शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, जबकि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की आकांक्षा स्तर एवं छात्राओं की आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।

अग्रवाल (2003) ने पारिवारिक वातावरण का किशोरों के व्यक्तित्व, शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रत्यय और आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि पारिवारिक वातावरण का किशोर के व्यक्तित्व, शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रत्यय और आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

चौधरी (2003) ने शोध अध्ययन में पाया कि व्यक्तित्व और आकांक्षा स्तर के मध्य मध्यम स्तर का सार्थक सह सम्बन्ध पाया गया। अस्थाना (2006) के शोध अध्ययन में छात्र और छात्राओं की आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सचान (2007) ने दिल्ली की पुनर्वास कालोनियों के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–बोध, शैक्षिक रूचि, आकांक्षा तथा उपलब्धि का अध्ययन किया। सांख्यिकी गणनोंपरांत निष्कर्ष में पाया कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं का छात्रों की अपेक्षा उच्च आकांक्षा स्तर पाया गया। जबकि निजी प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं का छात्रों की अपेक्षा मध्यम स्तर का आकांक्षा स्तर पाया गया।

सिंह (2012) ने शोध अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये– स्नातक स्तर के कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर मे सार्थक अन्तर पाया गया। इसी प्रकार स्नातक स्तर के कला वर्ग तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में भी सार्थक अन्तर पाया गया। इसी तरह स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर में भी सार्थक अन्तर पाया गया।

कुमार (2012) ने मलिन बस्तियों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन किया। सांख्यिकी गणनोपरांत निष्कर्ष में पाया कि मलिन बस्तियों के छात्र–छात्राओ की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर पाया गया। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि मलिन बस्तियों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा का निम्न स्तर उनकी समस्याओं को प्रभावित करता है।

सक्सेना (2014) ने माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति वर्ग और अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया। शोध से निम्न निष्कर्ष प्राप्त कियें– अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसी प्रकार अनुसूचित जाति वर्ग एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्रों के आकांक्षा स्तर में भी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसी प्रकार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं के आकांक्षा स्तर में भी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कुमार एवं शिवहरे (2016) ने पाया कि सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं का आकांक्षा स्तर आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं की तुलना में कम होते हुए भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है। आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में आरक्षित वर्ग की छात्र–छात्राओं में उच्च आकांक्षा स्तर तथा भविष्य में सफलता प्राप्त करने की दृष्टि से दृढ़ विश्वासी प्रवृत्ति की होती है।

प्रजापति (2018) ने जनजाति एवं गैर जनजाति के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध अध्ययन में पाया कि जनजाति वर्ग और गैर जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है। इसी प्रकार गैर जनजाति वर्ग के छात्रों एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर में भी इसी प्रकार सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

III. अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

मानव समाज की पुरानी मान्यता है कि मनुष्य की असाधारण प्रतिभा का श्रेय उसकी बुद्धि लब्धि (IQ) को जाता है। अपने पुत्र की तीक्ष्ण बुद्धि पर गर्वित कोई अभिभावक कहता है कि उसका लाडला वैज्ञानिक बनेगा क्योंकि उसका आई0क्यू0 210 है। यह सोच 20वीं सदी की देन है, जब मनोवैज्ञानिकों ने किसी व्यक्ति की प्रतिभा को आंकने का पैमाना उसके आई0क्यू0 को बनाया था। इस पद्धति में किसी की प्रतिभा का पता उसकी बौद्धिक तार्किकता और विवेक को परखकर लगाया जाता था। इस सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य में इस तथ्य को स्वीकारा गया कि व्यक्ति की बुद्धि–लब्धि जितनी ही अधिक होगी, उसे उतना ही अधिक बुद्धिमान कहा जा सकता है। परन्तु हमारे भूतकाल के अनुभव और प्रयोग बताते हैं कि बहुत अधिक बुद्धिमान लोग भी सदैव सफल नहीं हैं।

मनोवैज्ञानिक **जॉन डी0मेयर एवं पीटर सैलवी (1989)** और **डेनियल गोलमेन (1995)** ने मस्तिष्क विज्ञान और मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधों के आधार पर बुद्धि के एक नये प्रत्यय – सांवेगिक बुद्धि (EQ) को जन्म दिया। इनके अनुसार सांवेगिक बुद्धि, व्यक्ति के संवेगात्मक समायोजन से सम्बन्धित है, जिसका सम्बन्ध व्यक्ति की स्वजागृति, स्वप्रेरणा, आवेग–नियंत्रण एवं दूरदर्शिता जैसे गुणों से है।

देश के शैक्षिक स्तर पर महिलाओं के उत्थान एवं संवैधानिक प्राविधानों को पूर्ण करने के लिए ही प्रान्तीय एवं केन्द्रीय सरकारों ने अनेक योजनाएँ क्रियान्वित की। इसके परिणामस्वरूप भी नारियों की शिक्षा उपेक्षित रही है। इस तथ्य का मूल्यांकन करने हेतु निरंतर ऐसे शोध करने होंगे जो नारियों की शैक्षिक समस्याओं को जानने का प्रयास करें और साथ ही यह जानने का प्रयास करें कि अगर उनके मार्ग में कुछ अवरोध है तो इन अवरोधों का उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं

पर क्या प्रभाव पड़ता है? तात्पर्य यह हैं कि इन मार्ग में आने वाली बाधाओं से उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं का स्तर निम्न होता है या उन पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं से सम्बन्धित कोई अध्ययन शोधकर्त्री को प्राप्त नहीं हुआ है। उपर्युक्त अध्ययन के परिणामों को देखकर शोधकर्त्री ने इसे अपने अध्ययन का आधार बनाया है।

IV. समस्या कथन

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का उनकी सांवेगिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन

V. समस्या में प्रयुक्त पदों की व्याख्या

स्नातक स्तर –

प्रस्तुत अध्ययन में उन शिक्षण संस्थानों को जो उच्च शिक्षा के अन्तर्गत स्नातक स्तर तक की ऐसी शिक्षा व्यवस्थित करती है जिसमें छात्र उच्च माध्यमिक स्तर अर्थात् कक्षा – 11 से लेकर कक्षा – 12 की शिक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण कर प्रविष्ट होते है तथा उनकी आयु 16-22 वर्ष के मध्य होती है, स्नातक स्तर के महाविद्यालयों की संज्ञा दी गई है।

शैक्षिक आकांक्षा –

आकांक्षा का तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपने लक्ष्य को निर्धारित करके उसे प्राप्त करने की तत्कालीन क्षमता से है अर्थात् मूल्य या लक्ष्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा ही आकांक्षा कहलाती है। आकांक्षा से व्यक्ति के तत्कालीन लक्ष्य का संकेत मिलता है। आकांक्षा स्तर को ज्ञानात्मक प्रेरणा भी कहा जाता है। व्यक्ति अपने कार्य करने से पहले के अनुमापन तथा कार्य करने के बाद की उपलब्धि स्तर को सफलता–असफलता के अनुभव के द्वारा लक्ष्य का निर्धारण करता है, क्योंकि व्यक्ति जो कार्य करता है, वह किसी न किसी उद्देश्य या आकांक्षा से सम्बन्धित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक आकांक्षा से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में लक्ष्य प्राप्त करने की कठिनाई स्तर से है।

सांवेगिक बुद्धि –

संवेगात्मक बुद्धि (इमोशनल इंटेलिजेन्स) स्वयं की एवं दूसरों की भावनाओं अथवा संवेगों को समझने, व्यक्त करने और नियंत्रित करने की योग्यता है। दूसरे शब्दों में, अपनी और दूसरों की भावनाओ को पहचानने की क्षमता, अलग भावनाओं के बीच भेदभाव और उन्हें उचित रूप से लेबल करना, सोच और व्यवहार मार्गदर्शन करने के लिए भावनात्मक जानकारी का उपयोग को संवेगात्मक बुद्धि (इमोशनल इन्टेलिजेन्स) कहते हैं। संवेगात्मक बुद्धि के अंतर्गत संवेगात्मक व बौद्धिक विकास हेतु संवेगों को सरल व सुसाध्य बनाने, संवेग व संवेगात्मक ज्ञान को समझने तथा संवेगात्मक व बौद्धिक विकास हेतु संवेगों को नियंत्रित करने की योग्यता आती है।

प्रस्तुत शोध में संवेगात्मक बुद्धि का क्रियात्मक रूप से तात्पर्य के.एस.मिश्रा द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर आधारित विद्यार्थियों के प्राप्तांको से है।

VI. अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. स्नातक स्तर की उच्च एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है।

VII. प्रतिदर्श

शोध के सन्दर्भ में प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिदर्श चयन के निमित्त बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का अनुसरण किया गया। प्रथम स्तर पर यादृच्छिक चयन विधि बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र में अवस्थित जनपद झांसी के महाविद्यालयों को चयनित किया गया है। द्वितीय स्तर पर चयनित महाविद्यालयों के तृतीय बर्ष में अध्ययनरत कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के 600 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों तथा उनकी संख्या को तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

निर्धारित प्रतिदर्श की विभिन्न इकाईयों का वितरण

क्र.सं.	समूह	विज्ञान संकाय	कला संकाय	वाणिज्य संकाय	योग
1	छात्र	100	100	100	**300**
2	छात्रायें	100	100	100	**300**
	योग	**200**	**200**	**200**	**600**

VIII. उपकरण

प्रस्तुत शोध में आकांक्षा स्तर के मापन के लिए डा0 वी0पी0 शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी एवं सांवेगिक बुद्धि के मापन हेतु डॉ. एस.के. मंगल व श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित ''सांवेगिक बुद्धि सूची'' का प्रयोग किया गया है।

IX. सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध से सम्बन्धित एकत्रित प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी– परीक्षण सहसम्बन्ध गुणाक का प्रयोग किया गया।

X. परिणाम तथा विवेचन

अध्ययन का एक प्रमुख उद्देश्य स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का उनकी सांवेगिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। इस अध्ययन के सन्दर्भ में शोद्यार्थी द्वारा दो तकनीकियाँ अपनाई गई, यथा –

प्रथम – तुलनात्मक तकनीकी के अन्तर्गत, उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले तथा निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

द्वितीय – सहसम्बन्धात्मक तकनीकी के अन्तर्गत, स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं तथा उनकी सांवेगिक बुद्धि से सम्बन्धित प्राप्तांको के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया।

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करने के लिये सम्पूर्ण न्यादर्श को सांवेगिक बुद्धि के आधार पर दो समूहों यथा उच्च एवं निम्न में विभक्त किया गया। सम्पूर्ण न्यादर्श को दो समूहों में विभक्त करने के लिये सांवेगिक बुद्धि के मध्यमान तथा मानक विचलन को आधार बनाया गया। स्नातक स्तर के छात्र–छात्रायें जिनके सांवेगिक बुद्धि मापनी पर प्राप्तांक 85 $(M + 1\sigma)$ एवं उससे अधिक थे उन्हे उच्च सांवेगिक बुद्धि के समूह में रखा गया तथा भावी शिक्षक/शिक्षिकायें जिनके सांवेगिक बुद्धि मापनी पर प्राप्तांक 67 $(M - 1\sigma)$ या उससे कम थे उन्हे निम्न सांवेगिक बुद्धि के समूह में रखा गया। इन दोंनों समूहों की शैक्षिक आकांक्षाओं के मध्यमानों में अन्तर ज्ञात करने के लिए तथा शून्य परिकल्पनाओं की जांच हेतु टी–मान की गणना की गयी जिसके मानकों को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका : 1

उच्च एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का मध्यमान मानक–विचलन तथा क्रान्तिक–अनुपात मान

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	क्रान्तिक – अनुपात मान	सार्थकता स्तर
निम्न सांवेगिक बुद्धि	130	45.49	6.54	5.49	>0.05
उच्च सांवेगिक बुद्धि	148	49.13	4.02		

उपरोक्त तालिका में प्रदत्त शैक्षिक आकांक्षाओं के सन्दर्भ में प्राप्त सांख्यिकीय मानों के गहन निरीक्षणोपरांत स्पष्ट होता हैं कि शैक्षिक आकांक्षा मापनी पर उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले समूह के प्राप्तांको का मध्यमान निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले समूह के प्राप्तांको के मध्यमान से अधिक है। विभिन्न वर्गों के मध्य मध्यमानों के अन्तर की सत्यता ज्ञात करने के लिये क्रान्तिक–अनुपात मान की गणना की गयी। तालिका में प्रदर्शित सांख्यिकीय दृष्टि से 0.05 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक–अनुपात मान (5.49) इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पना *''उच्च एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है''* को अस्वीकृत करते हैं। परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्रायें, निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की तुलना में शैक्षिक आकांक्षाओं की दृष्टि से श्रेष्ठ है। उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सांवेगिक बुद्धि का सकारात्मक प्रभाव पडता है।

स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिये दोनों चरों के मध्य सहसम्बन्ध की भी गणना की गयी जिसे निम्न तालिका–2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका – 2
छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध

चर	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शैक्षिक आकांक्षा सांवेगिक बुद्धि	0.30	0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका–2 में प्रदर्शित शैक्षिक आकांक्षा एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक ($r = 0.30$) से स्पष्ट होता है कि दोनों चरों के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है। अतः स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सांवेगिक बुद्धि का सकारात्मक प्रभाव पडता है। अतः शून्य परिकल्पना *'स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सांवेगिक बुद्धि का प्रभाव नगण्य है'* अस्वीकृत होती है।

XI. शोधाध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष

उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले स्नातक स्तर के छात्र–छात्रायें, निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की तुलना में शैक्षिक आकांक्षाओं की दृष्टि से श्रेष्ठ है। स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सांवेगिक बुद्धि का सकारात्मक प्रभाव पडता है।

XII. शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षकों हेतु निहितार्थ :–

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत यह ज्ञात हुआ कि स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सांवेगिक बुद्धि का सकारात्मक प्रभाव पडता है। यहां शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों, कक्षा–कक्ष अन्तःक्रियाओं, निर्देशन तथा परामर्श आदि जैसी क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की आत्म–जागरुकता, आत्मप्रबन्धन, अन्तरवैयक्तिक जागरुकता, अन्तरवैयक्तिक प्रबन्ध, स्वानुभूति इत्यादि जैसी क्षमताओं तथा संवेगों को सकारात्मक रुप से प्रभावित करने पर बल देना चाहिए जिससे विद्यार्थियों की सांवेगिक एवं आध्यात्मिक बुद्धि का विकास किया जा सके। इसी प्रकार संवेगात्मक परिपक्वता के विकास के लिये विद्यार्थियों को अन्तर विषयी अध्ययन के लिए अभिप्रेरित करना चाहिए तथा उन्हें संवेदनाओं और संवेगों की अभिव्यक्ति तथा अनुशासन सीखने पर बल देना चाहिए।

विद्यार्थियों हेतु निहितार्थ :–

अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों को यह सुझाव दिया जाता है कि यदि उन्हें जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो उसके लिए बुद्धि के साथ–साथ संवेगात्मक बुद्धि का भी योगदान है इसलिए हर विद्यार्थी की अपनी संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि का मापन, मूल्यांकन करने के साथ–साथ उसके सतत् विकास में प्रयत्नशील रहना चाहिए। करुणा तथा स्वानभूति संवेगात्मक बुद्धि के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है जिनको हर छात्र को समझना तथा अपनाना चाहिए। अपने आपकों दूसरों की जगह पर रखकर सोचने की क्षमता व्यक्ति को दूसरो के दुख व सुख का एहसास दिलाती है तथा करुणा की भावना व्यक्ति को दूसरों के दुखों को दूर करने के लिए उचित कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करती है। इन दोनों कारकों के विकास के साथ ही संवेगात्मक बुद्धि का विकास सुनिश्चित हो जाता है।

नीति निर्धारकों हेतु निहितार्थ :–

नीति निर्धारक पाठ्यक्रम निर्माण तथा विकास से सम्बन्धित दिशा निर्देश प्रदान करते हैं और उन्ही दिशा निर्देशों में प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों को समावेशित करने हेतु प्रमुख सुझाव इस प्रकार है–

1. विभिन्न पाठ्य तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं के द्वारा शिक्षा के हर स्तर पर संवेगात्मक तथा इसके कारकों का विकास करने का प्रयास करना चाहिए।
2. उचित पाठ्य सामग्री को उपयुक्त विषयों में समाहित करते हुए बालकों के संज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष के साथ–साथ भावनात्मक पक्ष का विकास करना भी सुनिश्चित करना चाहिए।
3. विद्यालयी तथा महाविद्यालयी स्तर पर सभी विद्यार्थियों को उचित निर्देशन तथा परामर्श की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए जिससे की उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं को दिशा प्रदान की जा सके एवं उनकी शैक्षिक समस्याओं को दूर किया जा सके।
4. शिक्षण विधियों के निर्धारण के दौरान संवेगों के प्रति जागरुकता तथा नियन्त्रण करने के सम्बन्ध में शिक्षकों को दिशा निर्देश प्रदान किये जाने चाहिए।

अंततः यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध शिक्षा जगत से सीधे जुड़े हुए लोगों के लिए लाभकारी है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध न सिर्फ शिक्षकों एवं शिक्षा जगत के अभ्यास कर्ताओं को नई दृष्टि प्रदान करता है वरन यह अभिभावकों को भी नए तरीके से सोचने के लिए मजबूर करता है। अभिभावकों को अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के पुनर्निर्माण एवं पूर्ण संयोजन के लिए प्रेरित करता है।

XIII. संदर्भ सूची

अग्रवाल, एस. (2003). पारिवारिक वातावरण का किशोरों के व्यक्तित्व, शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रत्यय और आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन, (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र). छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

चौधरी, वी. (2003). क्रियेटिविटी इन रिलेशन टू लेवल ऑफ एसप्रेशन एण्ड पर्सनालिटी, साइको लेग्उवा, 33 (1), पृष्ठ सं. 73–77.

कुमार, ए. (2012). मलिन बस्तियों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन (अप्रकाशित लघु शोध–प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र). छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

कुमार, ए. (2013). छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं स्व–बोध का तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित लघु शोध–प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र). छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

कुमार, एस. एवं शिवहरे (2016). सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर तथा शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना : परिप्रेक्ष्य –23(1), पृष्ठ संख्या– 101–118.

Prajapati, D. K. (2018). *A Comparative Study of Self Concept, Level of Aspiration and Academic Achievement of Tribal and Non Tribal Students*, (Unpublished thesis, Education). Banaras Hindu, University, Varanasi. Retrieved from http://handle.net/ 10603/267012.Shodhganga @infibiable.net.in

सचान, ए. (2007). दिल्ली की पुनर्वास कालोनियों के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–वोध, शैक्षिक रूचि, आकांक्षा तथा उपलब्धि का अध्ययन (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र). छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

सक्सेना, वी. (2014). माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय, आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र). महात्मा ज्योतिवा फुले रूहेलखण्ड, विश्वविद्यालय, बरेली. Retrieved from http://Shodhganga@infibiable.net.in.

शर्मा, एस. निधि (2002). ए स्टडी आफ द इफेक्ट ऑफ पेंटरनल इनवाल्वमेन्ट एण्ड एसप्रेसन (अप्रकाशित, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र). छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

शर्मा, ए. के. (2002). उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की बुद्धिलब्धि, शैक्षिक रूचि, आकांक्षा स्तर एवं पारिवारिक सम्बन्धों से शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्धः एक तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र). छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

सिंह, आर. बी. (2012). स्नातक के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विधार्थियों की जीविका वरीयता, समायोजन तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र). महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलण्ड विश्वविद्यालय, बरेली. Retrieved from http:// Shodhganga@infibiable.net.in.